नाम - डा. प्रदीप कुमार राय,
एसो. प्रोफेसर, आर. एम. कॉलेज, सहरसा
विषय - राजनीति-शास्त्र
वर्ग - बी.ए. पार्ट - 02, सत्र - 2019-20
(प्रतिष्ठा)
पेपर - 04
अध्याय - 1.2 (भाग - 1)
दिनांक - 23.05.2020

टॉपिक — अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का क्षेत्र
(विषय-वस्तु)

एक नवीन विषय के रूप में अंतर्राष्ट्रीय राजनीति एक विषय क्षेत्र समय के साथ बढ़ता रहा है। समय-समय पर इसके अध्ययन में विषय का स्वरूप बदलता एवं बढ़ता रहा है। ग्रैसन कर्क ने इसमें राज्य व्यवस्था के स्वरूप एवं कार्यप्रणाली, राज्य की शक्ति को प्रभावित करने वाले तत्वों का अध्ययन, अंतर्राष्ट्रीय स्थिति एवं महाशक्तियों की विदेश नीति का अध्ययन, वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के इतिहास का अध्ययन एवं विश्व व्यवस्था के निर्माण की प्रक्रिया के अध्ययन को सम्मिलित बताया है। सन् 1954 ई. में कार्नेगी संस्थान, कालेज में चार्ल्स मेना इक्जरिचर, हान्स मॉरगेन्थाऊ, क्विन्सी राइट आदि ने भी इसके विषय-वस्तु पर प्रकाश डालते हुये विभिन्न विषय-क्षेत्रों का उल्लेख किया है। इन सबके आधार पर इसके विषय क्षेत्र एवं विषय-वस्तु का उल्लेख हम निम्न प्रकार से कर सकते हैं —

(1) अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के प्रधान पात्र - राज्य —
अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के प्रमुख पात्र के रूप में राज्य है। अतः राज्य का आपसी व्यवहार, संबंध

भौगोलिक संबंध और परिवेश आदि सबका अध्ययन किया जाता है।

(2.) <u>शक्ति के अध्ययन पर बल</u> — शक्ति अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन का एक प्रमुख विषय है। मॉरगेन्थाऊ के शब्दों में, अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में शक्ति सदैव तात्कालिक लक्ष्य रही है। सभी राज्य शक्ति के उपार्जन के लिये प्रयत्नशील रहते हैं और विदेशनीति इसकी प्राप्ति में प्रयत्नशील रहता है।

(3.) <u>संस्थाओं और संगठनों का अध्ययन</u> — राज्य अपने विभिन्न लक्ष्यों की पूर्ति हेतु विभिन्न संस्थाओं एवं संगठनों का निर्माण करते हैं उनकी मदद लेते हैं फलतः इनका संबंध द्विपक्षीय न होकर बहुपक्षीय हो गया है यह संबंध आर्थिक, सैनिक, तकनीकी, सांस्कृतिक आदि कई संस्थाओं एवं संगठनों के रूप में अभिव्यक्त होता है और ये सभी संस्थायें अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप ग्रहण कर लेती हैं। यूरोपियन संघ, विश्व बैंक, विश्व व्यापार संगठन, नाटो, सीटो, यू.एन.ओ. अरबलीग, आसियान, सार्क, यूनेस्को, विश्व ~~के साथ~~ स्वास्थ्य संगठन आदि से विभिन्न प्रकार के संगठन उल्लेखित किये जा सकते हैं।

(4.) <u>युद्ध एवं शांति की गतिविधियों का अध्ययन</u> — अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रों के बीच आपसी स्वार्थ एवं प्रतिस्पर्धा के परिणाम स्वरूप संघर्ष एवं युद्ध की स्थिति बन जाती है। यह आर्थिक प्रतिबंधों या आर्थिक स्तर पर भी लड़ी जाती है। अतीत का शीत युद्ध, अरब संघर्ष, खाड़ी युद्ध, कोरिया संघर्ष आदि इसके उदाहरण हैं जिनके समाधान हेतु शांति और समझौते के विकल्प तलाशे जाते हैं। (शेष- भाग-02 में)

Scanned with CamScanner